डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

सूचक है।

आर्यों का मूल निवास — आर्यों से संबंधित दूसरी महत्वपूर्ण समस्या है कि उनका मूल निवास निश्चित करना बहुत से विद्वानों भारत को ही आर्यों का निवास स्थान मानता है। लेकिन कुछ विद्वानों का मानना है कि आर्य विदेशी थे। अनेक विद्वानों का यह कहना भी है कि आर्य का मूल निवास यूरोप में था। फ्लोरेंस के एक विद्वान ने सबसे पहले संस्कृत और यूरोपीय भाषाओं में साम्राज्य रहने पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि आर्य यूरोप के ही रहने वाले हैं। क्योंकि संस्कृत में पिता को पित्री, लैटिन में पैटल, अंग्रेजी में फादर जर्मन में वटर कहा गया है। जो एक दूसरे से मिलता-जुलता है। लेकिन दूसरी ओर पी गाइल्स ने आर्य को आस्ट्रिया, हक और डैन्यूब घाटी का माना है। जहाँ पशुपालन और कृषि की व्यवस्था थी।

यूरोप को आर्यों का मूल निवास स्थान स्वीकार करने में बहुत सारी कठिनाइयाँ है। भाषा संबंधी साम्य निश्चित तौर पर यह प्रमाणित नहीं करता कि ~~आर्यों~~ आर्य यूरोप में ही रहते थे। दूसरी ओर यूरोपीय भाषा में ऐसा कोई ग्रंथ नहीं है जो वेदों के समकालीन हो। एक कठिनाई यह भी है कि बिना किसी वस्तु या पशु या वनस्पति की मूल उत्पति यूरोप में हुई तथा जिनके समान पूर्वी एवं पश्चिमी आर्य भाषाओं

डॉ० अनुजा कुमारी
SNRIS

1. प्रश्न - आर्य कौन थे ? उनके मूल निवास एवं वे कहाँ से आये थें। इस तथ्य पर प्रकाश डालें।

उत्तर - सिन्धु घाटी के सभ्यता के पतन के बाद भारत में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का उदय हुआ। इनमें सबसे महत्व पूर्ण आर्यों की सभ्यता है। वैदिक सभ्यता या आर्यों की सभ्यता की जानकारी प्राप्त करने से पहले हमें जानना होगा कि आर्य कौन थे। साधारणतया आर्य शब्द से एक जाति विशेष का बोध होता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति सभ्यता का संस्थापक माना गया है। लेकिन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किसी जाति के साथ आर्यों को नहीं जोड़ा जा सकता है।

आर्य शब्द संस्कृत भाषा का है। जिसका अर्थ उत्तम या श्रेष्ठ होता है। अतः यह कहना यहाँ सही जान पड़ता है कि आर्य शब्द जातीयता का बोध न कराकर यह किसी भाषीय समूह का बोध कराता है। लेकिन संस्कृत ग्रीक इत्यादि भाषाओं को बोलने वाले व्यक्तियों को आर्य कहा गया है। प्रारंभ में ये सभी व्यक्ति एक जगह रहते थे, परन्तु बाद में जाकर ये एशिया और यूरोप के विभिन्न भाग में बस गये। और इन्होंने विभिन्न सभ्यता को विकसित किया। इन्हीं की एक शाखा भारत में आयी जो संस्कृत भाषा बोलती थी। इसीलिए हम कह सकते हैं कि आर्य किसी जाति विशेष का बोध नहीं कराता बल्कि भाषाई वर्ग का

डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

एशिया का दूसरी ओर वे कहते हैं कि यदि मध्य एशिया ही आर्यों का मातृभूमि थी तो उनके वंशज वहाँ से समाप्त कैसे हो गये

~~The~~ The arctic home of the aryans नामक प्रसिद्ध पुस्तक में भारतीय विद्वान लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने इस बात को प्रचलित करने की कोशिश की है कि आर्यों का मूल निवास स्थान उत्तरी ध्रुव क्षेत्र था। ~~में भयंकर हिम्मपात होता था। जिससे छः महीने का दिन~~ जिसका वर्णन अवेस्ता नामक भौगोलिक शाखाओं से हमें मिलता है। तिलक ने यह भी कहा कि इस क्षेत्र में भयंकर हिम्मपात होता था। जिससे छः महीने का दिन और छः महीने की रात्रि होती थी। जिसका वर्णन अवेस्ता में किया गया है। इन्ही परिस्थितियों से बाध्य होकर करीब 8 हजार पूर्व आर्यों को यह प्रदेश छोड़ना पड़ा।

लेकिन अनेक विद्वान तिलक के इस मत से सहमत नहीं है उनका कहना है कि अगर आर्य उत्तरी ध्रुव के निवासी थे तो वे सप्त-सैन्धव प्रदेश को देवकृत योनि नहीं करते दूसरी ओर सिर्फ हिमपात के आधार पर आर्यों के आदि निवास के समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता।

अनेक भारतीय विद्वान इस बात को मानने के लिए बिल्कुल ही तैयार नहीं हैं कि ~~आर्यो~~ आर्य विदेशी थें। उनका कहना है कि आर्य भारत के ही मूल निवासी थें।

डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश और पोजिटर महोदय सनयोश इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन में यह प्रमाणित करने की कोशिश की है कि आर्य मूलतः तिब्बत के थे। उनका कहना है कि वे भारत में बाहर से नहीं आये, बल्कि भारत से ही बाहर गये।

लेकिन दूसरी ओर कुछ विद्वानों का यह भी कहना है कि अगर आर्य भारतीय थे तो सम्पूर्ण भारत का एक साथ आर्यीकरण क्यों नहीं हुआ वैसे भी वैदिक साहित्य से हमें यह जानकारी मिलती है कि आर्य प्रारंभ में सप्त-सैन्धव प्रदेश में बसे। और धीरे-धी उनका प्रसार गंगाघाटी में हुआ। ऐसी स्थि में यह प्रमाणित होता है कि आर्यों का मूल स्थान भारत नहीं था वैसे भी ऋग्व ऋग्वेद से हमें यह जानकारी मिलती है कि भारत आने के बाद आर्य सप्त-सैन्धव प्रदेश में बसे। इस प्रदेश के सात प्रमु नदियों का उल्लेख भी किया गया है।

इस प्रकार निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आर्यों के मूल निष्कर्ष के संबंध में जितने भी विचार प्रगट किये गये हैं कुछ सही है, और कुछ गल है, आधुनिक विद्वान यह मानते है कि इनक मूल निवास स्थान पौलैंड से मध्य एशि तक फैला हुआ था। ये विभिन्न भाषाओं क ज्ञान रखते थे। बदलती राजनीतिक औ

Scanned with CamScanner

डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

भौगोलिक परिस्थितियों से बाध्य होकर इनकी विभिन्न शाखायें यूरोप और एशिया के विभिन्न भागों में जाकर बस गयी। जिन्होंने विभिन्न संस्कृतियों और साम्राज्यों को जन्म दिया। इन्ही शाखाओं में से एक शाखा ईरान होते हुए भारत पहुँची जिसे हम आर्यों के सभ्यता के नाम से जानते हैं।

THE END

Scanned with CamScanner